जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ।।
जौं सभीत आवा सरनाईं। रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ।।

दो०-उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत।। **44** ।।

सादर तेहि आगें करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर ।।
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता ।।
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।।
सिंध कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा ।।
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता ।।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता ।।
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा ।।

दो०-श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर।। **45** ।।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ।।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भयहारी ।।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ।।
खल मंडली बसहु दिनु राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती ।।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती ।।
बरू भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ।।
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ।।

दो०-तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम।। **46** ।।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोद मच्छर मद माना ।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा ।।
ममता तरून तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी ।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ।।
अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे ।।
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ।।
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ।।
जासु रूपमुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान